MP Board Class 10th Sanskrit Solutions Durva Chapter 4 सुभाषितानि

प्रश्न 1.
एकान उत्तरं लिखत-(एक पद में उत्तर लिखिए)।
(क) गङ्गा किं हन्ति? (गङ्गा क्या नष्ट करती है?)
उत्तर:
पापम् (पाप को)

(ख) केतकीगन्धम् आघ्राय के स्वयम् आयान्ति? (केवड़े
की गन्ध को सूंघकर कौन स्वयं आ जाते हैं?)
उत्तर:
षट्पदाः (भौरे)

(ग) सर्वोत्तमं भूषणं किम् अस्ति? (सबसे उत्तम आभूषण क्या है?)
उत्तर:
वाग्भूषणम् (वाणी)

(घ) प्रीतिरसायनं किम् अस्ति? (प्रेमरूपी रस का आश्रय क्या है?)
उत्तर:
मित्रम् (मित्र)

(ङ) सर्वस्य के परीक्ष्यन्ते? (सबकी क्या परीक्षा की जाती है?)
उत्तर:
स्वभावः (स्वभाव)

प्रश्न 2.
एकवाक्येन उत्तरं लिखत-(एक वाक्य में उत्तर लिखिए-)
(क) केषां कृते महोदधिः अपारो नास्ति? किसके लिए महान् समुद्र अगम्य नहीं है?)
उत्तर:
व्यवसायद्वितीयानां कृते पहोदधिः अपारो नास्ति। (उद्यमशील लोगों के लिए महान् समुद्र अगम्य नहीं है।)

(ख) अर्थैः समायुक्तोऽपि कः परिभवपदं याति? (धन से युक्त होते हुए भी कौन पराजयता को प्राप्त होता है?)
उत्तर:
अर्थैः समायुक्तोऽपि कृपणः परिभवपदं याति। (धन से युक्त होते हुए भी कंजूस व्यक्ति पराजय को प्राप्त होते हैं।)

(ग) सन्तः कानि घ्नन्ति? (सज्जन क्या नष्ट करते हैं?)
उत्तर:
सन्तः पापं, तापं दैन्यं च ध्नन्ति। (सज्जन लोग पाप, ताप और दीनता का नाश करते हैं।)

(घ) कान् अतीत्य कः मूर्ध्नि वर्तते? (किसको छोड़कर क्या सर्वोच्च है?)
उत्तर:
सर्वान् गुणान् अतीत्य स्वभावः मूर्ध्नि वर्तते। (सब गुणों को छोड़कर स्वभाव सर्वोच्च है।)

(ङ)
कीदृशो वह्नि स्वयम् उपशाम्योते? (कैसी अग्नि स्वयं शान्त हो जाती है?)
उत्तर:
अतृणे पतितः वह्निः स्वयम् उपशाम्यति। (तिनके से रहित गिरी हुई अग्नि स्वयं शान्त हो जाती है।)

प्रश्न 3.
अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-(नीचे लिखे प्रश्नों के
उत्तर लिखिए)
(क) दानेन कानि-कानि भवन्ति? (दान से क्या-क्या होता है?)
उत्तर:
दानेन भूतानि वशीभवन्ति, वैराणि नाशं यान्ति, परः अपि बन्धुत्वम् उपैति, सर्वव्यसनानि च हन्ति। (दान से प्राणी वश में होते हैं, शत्रुभाव नष्ट हो जाता है, पराये भी अपने हो जाते हैं और सब बुरी आदतों का नाश होता है।)

(ख) पुरुष के न विभूषयन्ति? (पुरुष को क्या शोभा नहीं देते?)
उत्तर:
पुरुषः केयूराः न, चन्द्रोज्ज्वलाः हाराः न, स्नानं न, विलेपन न, कुसुमं न, अलङ्कताः मूर्धजा न विभूषयन्ति।

(पुरुष न बाजूबन्द, न चन्द्रमा जैसे उचल हार, न स्नान, न चन्दन आदि के लेप, न फूल और न सुसज्जित केशां से सुशोभित होता है।)

(ग) बुधजनसकाशात् मे किमभवत्? (विद्वानो की सङ्गति से मेरा क्या हुआ?)
उत्तर:
बुधजनसकाशात् मे मदः ज्वर इव व्यपगतः।
(विद्वानों की सङ्गति में मेरा अभिमान ज्वर के समान दूर हो गया।)

प्रश्न 4.
रिक्तस्थानानि पूरयत
(दिए हुए शब्दों से रिक्त स्थान भरिए-.)
(क) दानेन ..... वशी भवन्ति। (भूतानि/प्रेताः)
(ख) द्युतिं सैंही ..... किं धृतकनकमालोऽपि लभते। (श्वा/अश्वाः)
(ग) केतकीगन्धमानाय स्वयमायान्ति .....। (आपदाः/षट्पदाः)
(घ) क्षमाशस्त्रं करे यस्य ..... किं करिष्यति। (सज्जनः/दुर्जनः)
(ङ) अतीत्य हि गुणान्सर्वान् ..... मूर्ध्नि वर्तते। (स्वभावो/दुर्भावो)
उत्तर:
(क) भूतानि

https://www.evidyarthi.in/

(ख) श्वा
(ग) पट्पदाः
(घ) दुर्जनः
(ङ) स्वभावो

प्रश्न 5.
यथायोग्यं योजयत-(उचित क्रम से मिलाइए-)

'अ'	'आ'
(क) शशी	1. भूषणम्
(ख) वाग्भूषणम्	2. तापम्
(ग) गज इव	3. मदो मे व्यपगतः
(घ) मित्रम्	4. मदान्धः
(ङ) ज्वर इव	5. प्रीतिरसायनम्

उत्तर:
(क) 2
(ख) 1
(ग) 4
(घ) 5
(ङ) 3

प्रश्न 6.
शुद्धवाक्यानां समक्षम् 'आम्' अशुद्धवाक्यानां समक्षं 'न' इति लिखत- (शुद्ध वाक्यों के सामने 'आम' तथा अशुद्ध वाक्यों के सामने 'न' लिखिए-)
(क) अलङ्कृताः मूर्धजाः पुरुषं विभूषयन्ति।
(ख) संस्कृता वाणी पुरुष समलङ्करोति।
(ग) तृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति।
(घ) दानेन परोऽपि बन्धुत्वमुपैति।
(ङ) धृतकनकमालो श्वा सैंहीं द्युतिं लभते।
उत्तर:
(क) न
(ख) आम्
(ग) न
(घ) आम्
(ङ) न।

प्रश्न 7.
अधोलिखितक्रियापदानां लकारं पुरुषं वचनं च लिखत-(नीचे लिखे क्रियापदों के लकार, पुरुष और वचन लिखिए।)

	क्रियापदम्	धातुः	लकारः	पुरुषः	वचनम्
यथा–	अस्मि	अस्	लट्लकारः	उत्तमपुरुषः	एकवचनम्
(क)	घ्नन्ति				
(ख)	हन्ति				
(ग)	क्षीयन्ते				
(घ)	करिष्यति				

उत्तर:

	क्रियापदम्	धातुः	लकारः	पुरुषः	वचनम्
(क)	घ्नन्ति	हन्	लट्	प्रथमपुरुषः	बहुवचनम्
(ख)	हन्ति	हन्	लट्	प्रथमपुरुषः	एकवचनम्
(ग)	क्षीयन्ते	क्षय्	लट्	प्रथमपुरुषः	बहुवचनम्
(घ)	करिष्यति	कृ	लृट्	प्रथमपुरुषः	एकवचनम्

प्रश्न 8.
उदाहरणानुसारं पर्यायशब्दं लिखत-(उदाहरण के अनुसार पर्यायवाची शब्द लिखिए)
यथा- गङ्गा – देवनदी
(क) सन्तः
(ख) शिखरः
(ग) वीरः
(घ) षट्पदाः
(ङ) नयनयोः
उत्तर:
(क) सन्तः – सज्जनाः
(ख) शिखरः – तुंगः
(ग) वीरः – शूरः
(घ) षट्पदाः – भ्रमराः
(ङ) नयनयोः – नेत्रयोः

प्रश्न 9.
रेखाङ्कितपदान्याधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-(खांकित्त पदों के
आधार पर प्रश्न बनाइए।)
(क) ते सर्वत्र मिलन्ति। (वे सब जगह मिलते हैं।)
उत्तर:
के सर्वत्र मिलन्ति? (कौन सब जगह मिलते हैं?)

(ख) दानेन वैराण्यपि नाशं यान्ति। (दान से शत्रुभाव नष्ट होता है।
उत्तर”
केन वैराण्यपि नाशं यान्ति? (किससे शत्रुभाव नष्ट होता है?)

(ग) कृपणः परिभवपदं याति। (कंजूस पराजयता को प्राप्त होता है।)
उत्तर:
कः परिभवपदं याति? (कौन पराजयता, को प्राप्त होता है ?)

https://www.evidyarthi.in/

(घ) मे मदः ज्वर इव व्यपगतः। (मेरा घमण्ड ज्वर के समान दूर हो गया।)
उत्तर:
कस्य मदः ज्वर इव व्यपगतः? (किसका घमण्ड ज्वर के समान दूर हो गया?)

(ङ) केयूराः पुरुषं न विभूषयन्ति। (बाजूबन्द पुरुष को शोभा नहीं देते।)
उत्तर:
केयूराः कं न विभूषयन्ति? (बाजूबन्द किसको शोभा नहीं देते?)

प्रश्न 10.
श्लोकपूर्ति कुरुत। (श्लोक पूरा कीजिए।)
उत्तर:
(क) गङ्गा पापं शशी तापं दैन्यं कल्पतरुस्तथा।
पापं तापं च दैन्यं च घ्नन्ति सन्तोमहाशयाः॥

(ख) नात्युच्चशिखरो मेरु नातिनीचं रसातलम्।
व्यवसायद्वितीयानां नाप्यपारो महोदधिः॥

(ग) गुणाः कुर्वन्ति दूतत्वं दूरेऽपि वसतां सताम् ।
केतकी गन्धमाघ्राय स्वयमायान्ति षट्पदाः॥

(घ) क्षमाशस्त्रं करे यस्य दुर्जनः किं करिष्यति।
अतृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपशाम्यति॥

(ङ) सर्वस्य हि परीक्ष्यन्ते स्वभावाः नेतरेः गुणाः।
अतीत्य हि गुणान्सर्वान् स्वभावो मूर्धिन वर्तते॥